Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2023 GISRRJ | Volume 6 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

काव्यशास्त्र का उद्भव तथा विकास : एक संक्षिप्त परिचय

डॉ. दिलीप कुमार
पूर्व शोध छात्र, संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश।

Article Info
Publication Issue :
Volume 6, Issue 1
January-February-2023
Page Number : 58-62
Article History
Accepted : 01 Feb 2023
Published : 25 Feb 2023

शोधसारांश

काव्यशास्त्र की विकासयात्रा का मूल्यांकन करने वाले सभी विद्वान् इस शास्त्र का मूल 'ऋग्वेद' को मानते हैं। काव्य के अनेक तत्त्वों में रस का महत्त्व अपरिहार्य है। रस ही काव्य की जीवन्तता है।

मुख्य शब्द

काव्यशास्त्र, उद्भव, विकास, काव्य, साहित्य, दर्शन, अलंकार, रस।

काव्यशास्त्र का उद्भव– 'काव्यशास्त्र' काव्य और साहित्य का दर्शन तथा विज्ञान है। यह काव्यकृतियों के विश्लेषण के आधार पर समय–समय उद्भावित सिद्धान्तों की ज्ञानराशि है। काव्यशास्त्र को साहित्यशास्त्र तथा अलंकारशास्त्र एवं 'समीक्षाशास्त्र' भी कहा जाने लगा है। संस्कृत साहित्य में काव्य शास्त्र से सम्बन्धित अनेक ग्रन्थ आचार्यों ने प्रतिपादित किये गये हैं जैसे–

- अलंकार सर्वस्व – रूय्यक
- संकेत टीका – माणिक्यचन्द्र सूरि
- दीपिका – चण्डीदास
- काव्यप्रदीप – गोविन्द ठक्कुर
- सुधासागर या सुधाबोधिनी– भीमसेन दीक्षित
- दीपिका – जयंतभट्ट
- काव्यप्रकाशदर्पण – विश्वनाथ कविराज
- विस्तारिका – परमानन्द चक्रवर्ती
- साहित्यदर्पण – विश्वनाथ
- काव्यादर्श – दण्डी

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Shauryam Research Institute. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

- काव्यमीमांसा – कविराज राजशेखर
- दशरूपकम् – धनंजय
- अवलोक – धनिक
- ध्वन्यालोक – आनन्दवर्धन
- लोचन – अभिनवगुप्त
- काव्यप्रकाश संकेत – माणिक्य चन्द्र
- चन्द्रालोक – जयदेव
- अलंकार सर्वस्व – केशव मिश्र

काव्यशास्त्र की विकासयात्रा का मूल्यांकन करने वाले सभी विद्वान् इस शास्त्र का मूल 'ऋग्वेद' को मानते हैं। ऋग्वेद के मन्त्रों में काव्यशास्त्र से सम्बन्धित रस शब्द का स्पष्ट उल्लेख आता है–

'दधानः कलशे रसम्'

ऋग्वेद की एक उक्ति में उपमा पद का भी स्पष्ट प्रयोग मिलता है–

'ईयुषी रागमुपमा शश्वती नाम'

इस प्रकार रूपक, अतिशयोक्ति, पुनरुक्तनदाभास, लाटानुप्रास आदि अलंकारों का प्रयोग ऋग्वेद में उपलब्ध होता है। संस्कृत काव्यशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में डॉ0 पी0वी0 काणे ने ऋग्वेद के एक मन्त्र को उद्धृत कर उसमें चार उपमाएँ दिखाई हैं–

''अभ्रातेव पुंस एति प्रतीची गर्तारुगिव सनये धनानाम्।
जायेव पत्य उशती सुवासा उषा होव निरिणीते अप्सः।।

ऋग्वेद 1/124/17

डॉ0 काणे ऋग्वेद के एक अन्य मंत्र में रूपक, अतिशयोक्ति अलंकार की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं–

''द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वावत्त्यनश्चन्नन्योऽभिचका सति।।

ऋग्वेद 1.164.20

ऋग्वेद के मन्त्रों में काव्य शब्द का भी उल्लेख मिलता है–

''आदेवानामभवः केतुवग्नेमन्दो विश्वानि काव्यानि विद्वान्।।

ऋग्वेद 3.10.17

अलंकार के लिए सर्वप्रथम ऋग्वेद के सप्तममण्डल में 'अरंकृतिः' शब्द का प्रायेग मिलता है–

'का ते अस्त्यरंकृतिः सूक्तैः।

इसके अतिरिक्त वैदिक ऋचाओं में उपमा, रूपक, अतिशयोक्ति आदि के उदाहरण ऋग्वेद में स्थल–स्थल में मिलते हैं।

काव्य के अनेक तत्त्वों में रस का महत्त्व अपरिहार्य है। रस ही काव्य की जीवन्तता है–

'रसाधाधिष्ठितं काव्यं जीवदूरुपतया यतः।''

काव्यशास्त्र के विकास का युग परिचय इस प्रकार है–

(1) पूर्वभरतयुग

(2) भरतयुग

(3) भरतोत्तरयुग

(4) पण्डित राजोत्तर युग

(1) पूर्वभरतयुग–यह पूर्व वैदिक संहिताओं से लेकर पौराणिक तथा महाकाव्य के विशालतम वाङ्गमय काव्य काव्य शास्त्र की विविध, तत्त्वों तथा सिद्धान्तों से भरा हुआ है। वेद की ऋचाओं में जो काव्यत्त्व है वही **'आचार्यभरत'** के उपजीव्य हैं।

(2) भरतयुग– इस युग के महामहिम एकमात्र आचार्य भरत ही हैं। इनका नाट्शास्त्र नामक काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ इस युग की प्रमाणिकता सिद्ध करता है। नाट्यशास्त्र का छठाँ अध्याय नाट्य एवं काव्य का प्राणस्वरूप है। इसमें भरत जी ने काव्य की आत्मा **'रस तत्त्व'** को स्मरण किये हैं–

शृंगारहास्यकरुणा रौद्रवीरभयानकाः

बीभत्साद्भुतसंज्ञौ चे त्यष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः।

आचार्य भरतमुनि ने आठ रसों– शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स एवं अद्भुत को बताये हैं। इसी प्रकार से इन्होंने तीन भाव–स्थायी, संचारी तथा सात्विक को बताये हैं। स्थायी भाव 8 प्रकार के इस प्रकार नाट्यशास्त्र में इस प्रकार उल्लेख किये हैं–

रतिहसिश्च शोकश्च क्रोधोत्साहौ भयं तथा।

जुगुप्सा विस्मयश्चेति स्थायिभावा प्रकीर्तिताः।।

इसी प्रकार 33 संचारीभावों को इस प्रकार निर्दिष्ट किये हैं–

'निर्वेदग्लानिशङ्काख्यास्तथाऽसूयामदश्रमाः।

आलस्यं चैव (दैन्य च) चिन्ता मोहः स्मृतिर्धृतिः

व्रीडा चपलता हर्ष आवेगो जड़ता तथा

गर्वो विषाद औत्सुक्यं निद्रापस्मार एव च।।

सुप्तं विबोधोऽमर्षश्चाऽप्यवहित्थमधोग्रता।

मतिर्व्याधिस्तथोन्मादस्तथा मरणमेव च।।

त्रासश्चैव वितर्कश्च विज्ञेया व्यभिचारिणः।

आचार्य भरत ने 8 सात्विक भावों को उल्लेख क्रमशः इस प्रकार किये हैं–

स्तम्भः स्वेदोऽथ रोमा च स्वरभङ्गोऽथवेपयुः।

वैवर्ण्यमश्रु, प्रलय इत्यष्टौ सात्विका स्मृताः।।

नाट्यशास्त्र का 16वाँ अध्याय लक्षणों एवं अलंकारों का है। लक्षणों की संख्या 36 है– भूषण, अक्षरसंघात्, आदि लक्षणों के बाद आचार्य ने चार अलंकारों का परिचय दिया है–

'उपमा दीपकं चैन रूपकं यमकं तथा।

काव्यस्यैते ह्यलंकाराश्चत्वारः परिकीर्तिताः।।

(3) भरतोत्तरयुग– भरतमुनि के नाट्यशास्त्र के बाद अनेक लोक विश्रुत आचार्यों का प्रादुर्भाव हुआ। यद्यपि महानाटक कार भास आचर्य भरत से अप्रभावित प्रतीत होते हैं। इसीलिए उन्हें भरत से पूर्ववर्ती स्वीकार किया गया है। कविकुल गुरु कालिदास को भरत का परवर्ती स्वीकार किया गया है। भरतोत्तर युग की प्रमुख विशेषता यह प्राप्त होती है कि उसमें काव्यशास्त्र तथा नाट्यशास्त्र का पृथक्–पृथक् किन्तु समनान्तर विकास हुआ है। आचार्य भरतमुनि के षटत्रिशंक नाट्यशास्त्र लिखा है। इस ग्रन्थ में काव्य एवं नाट्य दोनों का समन्वित प्रतिष्ठापन हुआ है।

(4) पण्डित राजोत्तर युग– पण्डितराज ने तीन प्रमुख काव्यशास्त्रीय काव्य कृतियाँ लिखी हैं–'चित्रमीमांसा खण्डन, मनोरमाकुचमर्दनटीका' तथा 'रस गंगाधर' की रचना किये हैं। पण्डितराज जगन्नाथ ने इन तीन कृतियों के अतिरिक्त नौ साहित्यिक रचनायें भी रचित की हैं– गंगालहरी, अमृतलहरी, लक्ष्मीलहरी, करुणालहरी, यमुनाभरण आदि प्रमुख हैं। इन काव्य कृतियों में 'रसगंगाधर' इनकी अत्यन्त प्रौढ़ कृति है। इस कृति में दो 'आनन' उपलब्ध होते हैं। प्रथम आनन में काव्य लक्षण, काव्यहेतु तथा काव्यभेद की समीक्षा की गयी है। द्वितीय आनन में संलस्यक्रमध्वनि का विवेचन, ध्वनि के विविध भेद एवं उपमा से उत्तर तक 70 अलंकारों की उदाहरण सहित व्याख्या की गयी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ0 एस0के0दे0: संस्कृत पोएटिक्स, भाग 1.5.1
2. पं0 बलदेव उपाध्याय : भारतीय साहित्यशास्त्र, खण्ड 1–2
3. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–बलदेव उपाध्याय, काव्यमीमांसा, कामसूत्र, ऋग्वेद, 7–29–3
4. अष्टाध्यायी 2–1–55, 2–1–56, 2–3–62
5 .महाभाष्य 2–1–56
6. उद्धृत–संस्कृत का समीक्षात्मक अर्वाचीन काव्यशास्त्र–डॉ0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र
7. नाट्यशास्त्र 6–116
8. नाट्यशास्त्र 6–18